VI

कालीबंगा संस्कृति

२० घोष के सर्वेक्षण के परिणामस्वरूप 1950-53 के मध्य कालीबंगा (जिला-गंगानगर, राजस्थान) की खोज हुई। कालान्तर में बी. बी. लाल एवं बी. के. थापड़ ने उत्खनन कराया जिसके फलस्वरूप प्राक् हड़प्पीय संस्कृति के अवशेष प्रकाश में आये।

इस संस्कृति के पात्र पतले एवं चाक निर्मित हैं। ये लाल या गुलाबी पात्र काले एवं सफेद रंग की चित्रकारी युक्त हैं। ये चित्रण मुख्य आकार पेड़ पौधे, मछली, बतख, तितली, हिरण, सांड, बकरे, बिन्दु एवं त्रिकोण के रूप में हैं। यहाँ से प्राप्त मृद्भाण्डों को निम्न 6 (A-F) वर्गों में विभक्त किया गया है।

A. काले रंग से निर्मित चित्रण युक्त कटोरे एवं मटके, ये चाक से निर्मित हैं। इसका रंग लाल-पीले एवं साधारण पात्र हैं।

B. हिरण के चित्रण युक्त बाहर से खुरदुरे पात्र।

C. मत्स्य-शल्क या संहरेखा जैसी आकृति युक्त बहुत सुन्दर पात्र।

D. उत्कीर्णित चित्रण युक्त अनाज संग्रह के पात्र।

E. सफेद भूरे रंग युक्त छोटे आधार युक्त प्याले।

F. साधारण थालियाँ, कटोरे एवं तई जैसे भूरे रंग के बर्तन।

यहाँ से प्राप्त प्राक्हड़प्पीय कालीबंगा मृद्भाण्डों को "सोथी" मृद्भाण्ड की संज्ञा दी है। इन पात्रों की तुलना कोट दीजी एवं बलूची स्थलों से की है। लोथल के सबसे निचले स्तरों से भी इस काल के पात्र प्राप्त हुए हैं जिससे ज्ञात होता है कि इस काल में प्राक् हड़प्पीय काल में कटोरे, थार, आदि निर्माण हो गया था।

सुरक्षा दीवार:— उत्खनन से कई स्थलों से

सुरक्षा दीवाल युक्त स्थलों के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
• मुंडीगाक पर कच्ची ईंटों से निर्मित मंदिर एवं भवन के साथ-साथ सुरक्षा दीवाल के भी अवशेष प्राप्त होते हैं। कालीबंगा से इस काल में विकसित सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इसी काल में सुनियोजित सड़कों के साथ-साथ भवन निर्माण भी प्रदर्शित होता है। जहाँ पर घरों एवं सुरक्षा दीवाल की नींव में पाषाण खण्डों का प्रयोग किया गया है जबकि दीवाल के निर्माण में कच्ची ईंटों का प्रयोग की गई है। कालीबंगा जैसे स्थल पर कच्ची ईंटों द्वारा निर्मित भवन एवं सुरक्षा दीवाल प्राप्त हुए हैं।
भवन:— प्राक् हड़प्पीय भवनों के निर्माण में विविधता है। कहीं तो पूर्ण विकसित शहरी सभ्यता के अवशेष प्राप्त होते हैं और कहीं पूर्ण अविकसित। मुंडीगाक पर दुकानों एवं घरों के अवशेष योजनाबद्ध रूप में प्राप्त होते हैं जो कि ईंटों द्वारा निर्मित हैं। इन कमरों के मध्य में चूल्हे एवं मिट्टी के बर्तन पकाने की भट्ठियाँ प्राप्त होती हैं। जमला पर जमीन पर गड्ढा खोदकर चारों ओर मिट्टी की छोटी दिवाल खड़ी की जाती थी। उसपर लकड़ी आदि की सहायता से छतों का निर्माण किया जाता था। कालीबंगा पर घरों के निर्माण में कच्ची ईंटों का प्रयोग प्रदर्शित होता है।
प्रस्तर सामग्री:— प्रस्तर सामग्रीयों में बहुधा प्राप्त होने वाले लघु पाषाण उपकरण हैं। इन लघु पाषाण उपकरणों का सर्वोत्तम उदाहरण मेहरगढ़ नामक स्थल से प्राप्त हुआ है। यहाँ पर लघु पाषाण उपकरणों को मिट्टी द्वारा हँसिये में फंसाकर कृषि कार्य में प्रयोग किया जाता था। लघु पाषाण उपकरण मिट्टी में फंसे हुए प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त अनेक स्थलों से प्रस्तर कुल्हाड़ियाँ प्राप्त हुई हैं।

Scanned with CamScanner

धातु प्रयोग :- उस काल में धातु शोधन प्रारम्भ हो गया था क्योंकि धातु निर्मित सामग्रियाँ अनेक स्थलों से प्राप्त हुई हैं। इनमें कोटदीजी से प्राप्त चूड़ी, कालीबंगा से कई वस्तुएं, मेहरगढ़ से ताम्र कुल्हाड़ी, दण्ड, साहात से कई टुकड़े एवं कटार, सराय खोला से चूड़ियाँ, अंगूठियाँ, पिन एवं सलाइयाँ आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। नाल से बहुत से ताम्र उपकरण (18) प्राप्त हुए हैं। इनमें कुल्हाड़ियाँ, बसूले एवं आरियाँ मुख्य हैं। अतः इन धातु उपकरणों का जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता था जो कि उपकरणों एवं आभूषणों के लिए विशेष उपयोगी था।

आभूषण :- विविध प्रकार की सामग्री आभूषण के रूप में प्राप्त हुई है। इसमें सर्वप्रथम अनेक प्रकार के मनके आते हैं। ये विभिन्न प्रकार के मनके बहुधा बहुमूल्य पत्थरों पर निर्मित हैं। भोपिस लाजुली का भी प्रयोग मेहरगढ़, सराय खोला आदि स्थलों से प्राप्त हुए हैं। मृदा, ताम्र एवं शैल पर निर्मित चूड़ियाँ भी कई स्थलों से प्राप्त हुई हैं। इसके ~~अतिरिक्त~~ अतिरिक्त अंजन, सलाइयाँ, अंगुठी, पिन, आदि प्राप्त हुआ है।

वाणिज्य एवं व्यापार :→ प्राक्हड़प्पीय स्तरों से विभिन्न उद्योग-धंधों के प्रमाण उपलब्ध होते हैं जो सम्भवतः ~~आवश्यक~~ आवश्यकता से अधिक होने के कारण निर्यात एवं आयात किये गए होंगे। इनमें मृत पिण्ड, बाट, गोले एवं स्केल का उल्लेख है। इसमें कोटदीजी से प्राप्त चित्रित पाषाण बाट-माप से तौल प्रचलन के विषय में पर्याप्त सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त कई स्थलों से मृत पिंड की उपलब्धियाँ भी सम्भवतः बटखरे के रूप में प्रयोग की ओर संकेत करती हैं। कालीबंगा से प्राप्त खिलौना गाड़ी यहाँ पर अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि ये सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए-

Scanned with CamScanner

एवं आवागमन में सुविधा के लिए प्रयोग में आती

धार्मिक दशा:-

इस काल की धार्मिक दशा का ज्ञान हमें मुख्यतया विभिन्न स्थलों पर मृण मूर्तियों एवं शव दफनाने की प्रथा से ज्ञात होता है। मृण निर्मित विभिन्न मूर्तियाँ बहुधा मातृदेवी की हैं एवं कुछ अन्य सेरन्यक सांड या अन्य मानवों की की हैं। ये मूर्तियां नाल, कुल्ली, सहर-ए-सोख्ता, पेरियानो-घुण्डई, डाबरकोट, शाही टुम्प, मेहरगढ़, सराय खोला आदि हैं। इनमें गुमला से प्राप्त नाग देवी मूर्तियां विशेष उल्लेखनीय हैं। जिससे विद्वान अनुमान लगाते हैं कि ये स्थल नाग पूजकों द्वारा आबाद था। यहाँ से प्राप्त शृंगी देव एवं चित्रण कोटदीजी के समकक्ष हैं, धार्मिक विश्वास के कारण निर्मित माना जाता है। हिसार (अफगानिस्तान) से भी शृंगी देवों की मूर्तियां प्राप्त हैं। मेहरगढ़ से प्राप्त सैकड़ों की संख्या में प्राप्त नारी एवं पुरुष मूर्तियां विशेष महत्वपूर्ण हैं। यहाँ से प्राप्त नारी मूर्तियों के केश लम्बे-लम्बे हैं एवं सुन्दर तरीके से निर्मित हैं। इनके प्राकृतिक चित्रण अत्यन्त स्वाभाविक हैं। सराय खोला एवं डेरा गाज़ी की बैठी नारी मूर्तियाँ एवं पशु मूर्तियां उल्लेखनीय हैं। मुगल घुण्डई से प्राप्त लिंग एवं योनि की प्राप्ति शैव धर्मावलम्बियों की ओर संकेत करती है।

अन्त्येष्टि :→ नाल, शाही टुम्प, कालीबंगा आदि स्थलों से शवों की अन्त्येष्टि के विषय में प्राप्त जानकारी होती है प्रचलित विधियां निम्न थी:-

1. शव को गड्ढा खोदकर घर में गाड़ते थे।
2. शव को बाहर सुखाने के उपरान्त गड्ढे में गाड़ा जाता था।

3. शव को जलाने के उपरांत बची राख या हड्डी आदि को गड्ढे में भरकर गाड़ा जाता था।

इन शवों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की अन्त्येष्टि सामग्री प्राप्त होती है जिनमें विभिन्न प्रकार के ~~खाद्य~~ पात्र, ताम्र उपकरण, एवं हथियार, आभूषण एवं ताम्र, कांस्य दर्पण आदि हैं।

खाद्य सामग्री :— उत्खननों में विभिन्न प्रकार के अनाज के दाने प्राप्त हुए हैं जिससे उस समय खेती के विषय में ज्ञात होता है। रहमान ढेरी एवं मेहरगढ़ से गेहूँ एवं जौ के दानों की प्राप्ति से इनकी खेती करने का अनुमान होता है। कालीबंगा से जौ के अवशेष प्राप्त हुए हैं। वहीं से गेहूँ जौ, दाल, एवं मटर उपलब्ध हुई हैं। सर्वोत्तम उदाहरण कालीबंगा पर प्राक्हड़प्पीय स्तरों से हल द्वारा खेत जोते जाने का निशान के रूप में प्राप्त हुए हैं। ये हल किस धातु द्वारा निर्मित किये गए हैं, ज्ञात नहीं हैं।

लिपि:— मुंडीगाक, जलील सादात से मृद्भाण्डों पर कुम्हार के निशान प्राप्त होते हैं। रहमान ढेरी से प्राप्त मृद्भाण्डों पर उत्कीर्ण चिह्न बहुतायत से प्राप्त होते हैं जिससे आलचिन दम्पति के मत में हड़प्पीय लिपि की शुरुआत इसी स्थल से हुई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पिछले दो दशकों में कुछ नवीन तथ्य सामने आये हैं जो इस संस्कृति एवं हड़प्पीय संस्कृति के नवीन तथ्यों को उजागर करते हैं। इसी काल में सुरक्षा दिवाल का निर्माण प्रारम्भ हो गया था एवं पकी ईंटों की नालियों में प्रयोग की जाती थी। अतः हड़प्पीय नगरीकरण का सूत्रपात इसी काल से होते हुए दिखलाई पड़ती है। इसी प्रकार अनेक स्थलों से मुद्रा एवं आदिम सील प्राप्त

Scanned with CamScanner